## दादी जानकी जी के साथ रूहरिहान (17-6-14)

**प्रश्नः- दादी जी मम्मा के दिन चल रहे हैं, मम्मा ने ऐसा क्या पुरुषार्थ किया जो नम्बरवन चली गई? आप मम्मा की कुछ विशेषतायें सुनायें।**

**दादी जानकीः-** मम्मा ने ज्ञान को न सिर्फ कानों से सुना, पर उस निज ज्ञान को एकदम प्रैक्टिकल जीवन में लाया। चाहे गुणों के आधार से, चाहे ज्ञान के आधार से, चाहे योग के आधार से, चाहे सेवा के आधार से। मम्मा ने सब सबजेक्ट में नम्बरवन लिया। मम्मा बहुत प्यार से बैठकर ज्ञान सुनाती थी। मम्मा ज्ञान की एक एक बात की गहराई में जाती थी। जैसे आज बाबा ने कहा बच्चों की ऐसी विशाल बुद्धि चाहिए। तो मम्मा की बुद्धि बहुत विशाल थी। डल बुद्धि, जामड़ी बुद्धि नहीं थी।

मैं भाग्यवान हूँ, बाबा मम्मा को ज्ञान के पहले भी देखा था। बाबा को देखा था अपने जौहरी की पर्सनैलिटी से, वन्डरफुल पर्सनैलिटी थी। मम्मा को देखा था कुमारियों में से ऐसी कुमारी फैशनबुल, यज्ञ में आते ही उसमें अति परिवर्तन देखा। यह भी मम्मा की कमाल थी। एक धक से फैशन को छोड़ बहुत सिम्पल बन गई। शान्तामणि दादी मम्मा के मौसी की लड़की थी, परन्तु एक दो का आपस में कोई लौकिक सम्बन्ध है, यह किसी को भी दिखाई नहीं पड़ा। मम्मा बहुत डिटैच रहती थी। न्यारी प्यारी। यह मम्मा की बड़ी खूबी थी। मम्मा कभी लौकिक सम्बन्ध के हिसाब से नहीं रही। मम्मा बहुत रॉयल थी।

मम्मा ने माँ का पार्ट बजाया, लेकिन मम्मा के चलने फिरते में भी कभी रोब नहीं देखा। मम्मा अमृतवेले चक्कर लगाती थी लेकिन कभी किसी से रोब से बात नहीं की। हम अजब खाती थी, पूणे में मम्मा हमारे साथ थी, सबके साथ मिलते जुलते बहुत गम्भीर।

कभी साक्षी होकरके देखो, हम लोगों का भाग्य है, जानना, देखना फिर इतने साल साथ में पार्ट बजाना, यह कम बात है क्या! यह भी कितना भाग्य है!

**प्रश्नः- दादी हम लोगों की इतनी शुभ भावनायें हैं क्या यह शुभ भावनायें पेन को (दर्द) को समाप्त नहीं कर सकती?**

**उत्तरः-** हम सदा कहती बाबा आपका काम है कहना, हमारा काम है करना। बहुत करके गुल्जार दादी यही कहती है – बाबा ने कहा, हमने किया। अभी कहते यह हिसाब-किताब है! मैं दादी गुल्जार से कभी-कभी पूछती हूँ, क्या मेरा पूर्व जन्म का हिसाब चुक्तू नहीं हुआ है! शायद, शायद नहीं कहती हूँ, हिसाब किताब चुक्तू नहीं हुआ है, न सिर्फ हमारा पर अनेक आत्माओं का। हो जायेगा। कर्मातीत तो बनना है ना! सतयुग तो आने वाला है ना, गैरन्टी है हम सतयुग में आने वाले हैं, सतयुग की स्थापना करने वाले हैं।

एक बारी का दृश्य मुझे कभी भूलता नहीं है। रोचा भोग लगा रही थी, तभी भोग की सिस्टम शुरू हुई थी तो रोचा भोग लगा रही थी, बाबा मम्मा एक दो को दृष्टि दे रहे थे। तो मम्मा से किसी ने पूछा मम्मा क्या आपको नशा चढ़ा हुआ था कि मैं लक्ष्मी, नारायण की हूँ! तो मम्मा ने बड़े प्यार से, सीरियसली आंख दिखाई, यह नहीं कह सकते मैं लक्ष्मी, नारायण की बनूंगी। मैं तो इस समय बाबा की बेटी हूँ। बहुत अव्यक्त स्वरूप था। जरा भी व्यक्त भान नहीं थी। तो इस जन्म में मम्मा ने अपना पुरुषार्थ किया है, बाबा ने अपना किया है। मम्मा उस समय देह के भान से बिल्कुल परे थी।

पुरुषार्थ में बहुत-बहुत सच्चाई चाहिए, जरा भी मिक्सचर नहीं। हम भी कहेंगे कुछ जरा भी मिक्सचर न हो। जैसे बाबा मम्मा के पुरुषार्थ में मिक्सचर नहीं है, ऐसे हमारे पुरुषार्थ में भी न हो। मम्मा बहुत-बहुत न्यारी,

न्यारी। मम्मा रात को मुरली पढ़ रही है, परन्तु यहाँ जैसे है नहीं। स्टडी बहुत अच्छी। पद जो है वह स्टडी से है। बाबा का पद स्टडी से है। शिवबाबा पढ़ा रहा है, पढ़ाई से बहुत प्यार।

**उसके बाद सार रूप में दादी ने सुनाया कि**

1- मम्मा को परचिंतन, परदर्शन का जैसे पता ही नहीं था। कभी मम्मा को परचिंतन करते हुए नहीं देखा।

2- जो बाबा ने कहा, मम्मा ने वही किया। कभी भी उसमें अपना संकल्प भी एड़ नहीं किया।

3- मम्मा बहुत सिम्पुल थी। जैसे पहले इतनी फैशनफुल थी, ऐसे बाबा का बनने के बाद बिल्कुल सिम्पुल।

4- मम्मा सदा एकान्तवासी थी। बहुत कम बोलती थी। मम्मा को एकान्त बहुत पसन्द था। दो बजे उठकर छत पर चली जाती थी, वहाँ एकान्त में तपस्या करती थी। मम्मा तपस्वीमूर्त थी।

5- मम्मा सदा अपने स्वमान में रही और सबका स्वमान बढ़ाने में नम्बरवन रही।

6- मम्मा का स्टडी पर पूरा ध्यान था। बाबा की मुरली कई बार पढ़ती थी।

7- मम्मा बहुत नम्रचित थी, उनके चलने फिरने से कभी रोब नहीं दिखाई देता था।

8- पुरुषार्थ में सच्चाई बहुत थी। जरा भी मिक्सचर नहीं था।

——